मंत्री, श्री सम्यग् ज्ञान प्रचारक मंडल
जोधपुर

प्रथमबार १०००—मूल्य पांच आना

मुद्रक—नथमल लूणिया
सस्ता-साहित्य प्रेस, ब्रह्मपुरी अजमेर।
संचालक—जीतमल लूणिया

प्रकाशक का वक्तव्य

कुछ ही दिनों पूर्व हम आपके सामने जैन कन्या बोधिनी का प्रथम भाग रख चुके हैं। यह दूसरा भाग भी आपकी सेवामें हाजिर है। हमें विश्वास है कि ये दोनों भाग बालिकाओं के लिये विशेष हितकारी सिद्ध होंगे। इस बात का पूरा खयाल रक्खा गया है कि देहरावासी और स्थानकवासी दोनों समाजों के लिये ये पुस्तकें उपयोगी हो सकें।

शिक्षण संस्थाओं के संचालकों से प्रार्थना है कि वे इन पुस्तकों को पाठ्यक्रम में स्थान देकर हमारा उत्साह बढ़ावें तथा श्रम सफल करें।

सम्यग् ज्ञान प्रचारक मंडल
जोधपुर
वीर संवत २४७१ कार्तिक शुक्ला १

ऋषभराज कर्णावट
बी ए एल एल बी
मंत्री—

सम्पादकीय

जैन कन्या बोधिनी का यह दूसरा भाग आपके हाथों में है। पुस्तकीय पाठ तो पुराने ही हैं, लेकिन आधुनिक भाषा शैली में गुथ कर उन्हें नवीन बनाने की कोशिश की गई है। यह नयान तरीका आपको पसन्द आयगा या नहीं, यह प्रश्न तो अभी प्रश्न ही है ?

हम उन समस्त लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं जिनकी रचनाओं का प्रस्तुत पुस्तक में उपयोग किया गया है।

—रत्नेश

जैन-कन्या-बोधिनी

दूसरा भाग

पाठ १

ईश विनय

हे प्रभो! जिनराज तुमको, नमन हम करतीं सदा।
भाव से तेरा ही मन में, ध्यान धरती हैं सदा।
दो हमें वह ज्ञान दीपक, मोह मनका दूर हो।
लोभ, मद, हिंसादि दुर्गुण, नाश कर हम शूर हों।
हम गुरु माता पिता की, भक्ति तन मन से करें।
देश धर्म समाज का कल्याण हो ऐसा करें।
राजिमती सी ब्रह्मचारी, चन्दना सम वीर हों।
सीता सुभद्रा सम बनें, दमयन्ती जैसी धीर हों।

१—इसे जबानी याद करके सुनाओ।

२—तुम संसार में क्या भावना रखोगी?

कठिन शब्दार्थ—मद = अहंकार, शूर = बहादुर, तन = शरीर
कल्याण = भलाई, दीपक = दीया

पाठ २

सार्थ नवकार मंत्र

तारा—बहिन ! आज सुबह आप क्या बोल रही थी।

कमला—तारा मैं नमस्कार मंत्र बोल रही थी।

तारा—बहिन, नमस्कार मंत्र का क्या अर्थ है, और उसमें किनको नमस्कार किया गया है ?

कमला—नमस्कार मंत्र में अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पांच को नमस्कार किया गया है। अरिहन्त और सिद्ध ये दो देव हैं, तथा आचार्य, उपाध्याय और साधु ये तीन गुरु हैं। इस मंत्र को पंच परमेष्ठी मंत्र भी कहते हैं। अच्छा, अब मैं इसका अर्थ बताती हूँ, सुनो।

णमो अरिहन्ताण—णमो का मतलब है नमस्कार और अरिहन्ताण यानी अरिहन्तों को। अर्थात् श्री अरिहन्त देव को नमस्कार हो।

णमो सिद्धाण—श्री सिद्ध भगवान को नमस्कार हो।

णमो आयरियाण—श्री आचार्य महाराज को नमस्कार हो।

णमो उवज्झायाण—श्री उपाध्याय महाराज को नमस्कार हो।

णमोलोए सव्वसाहूणं—लोक में विराजमान सब साधुओं को नमस्कार हो।

तारा—बहिन ! क्या इस मंत्र को बोलने से कुछ फल भी होता है ?

कमला—हां, देखो शास्त्र में इसका फल इस तरह से लिखा है—

एसो पंच णमुक्कारो—ये पांच पदों का नमस्कार।
सव्व पावप्पणासणो—सब पापों का नाश करने वाला है।
मंगलाणं च सव्वेसिं—और सब मंगलों में।
पढमं हवइ मंगलं—उत्तम मंगल है।

तारा—इसका जाप कब करना चाहिये यह भी तो बताओ ?

कमला—सुबह-शाम, भोजन से पहिले, सोते समय उठते समय और हर एक काम करते समय नवकार स्मरण करते रहना चाहिये। क्योंकि यह हमारा सबसे बड़ा मंत्र है। इसके जाप से हमारे मन को बड़ी शान्ति मिलती है। अनादर भाव से कभी नहीं बोलना चाहिये।

तारा—बहिन, अगर ऐसी बात है, तो कल से मैं भी नमस्कार मंत्र का जाप किया करूंगी, और आज से

नियम लेती हूँ कि इसका जाप किये बिना कभी भोजन नहीं करूंगी।

कमला—बहुत अच्छा तारा, तुम्हारी तरह हर एक भाई बहिन को नमस्कार मंत्र का जाप अवश्य करना चाहिये। जो श्रद्धा के साथ नवकार का स्मरण करते हैं, उनके सब दुख दूर हो जाते हैं।

१—नवकार मंत्र में किन २ को नमस्कार किया गया है ?
२—णमो लोए सव्वसाहूणं का क्या अर्थ है ?
३—नमस्कार मंत्र में कौन देव हैं और कौन गुरु ?
४—तारा ने क्या नियम लिया ?
५—क्या तुम भी नवकार जपती हो ?



पाठ ३

वन्दना-पाठ

सुशीला-दया, क्या तुमको गुरु-वन्दना का पाठ आता है ?

दया-जी नहीं।

सुशीला-तो, अब तक तुम वन्दना कैसे करती थी ?

दया-दोनों हाथ जोड़कर कर लेती थी।

सुशीला–दया, तुम्हारी जैसी लड़कियों को तो गुरु वन्दना का पाठ याद कर लेना चाहिए, और उसे बोलकर ही वन्दना करनी चाहिये। अरे! वह है भी कितना केवल तीन लाईन का तो पाठ है। तुम जब चाहो, तभी याद कर सकती हो।

दया–तब तो मुझे वह पाठ बता दीजिये बहिन! मैं आज ही याद कर सुना दूंगी।

सुशीला–देखो गुरु वन्दन का पाठ यह है —

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि
नमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं
मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

इस पाठ को तीन बार बोलकर अपने गुरुओं को वन्दना नमस्कार करना चाहिये। गुरु से मतलब मेरा सन्त मुनिराजों से है। तुम कहीं अपने पढ़ाने वाला को मत समझ लेना दया?

दया वे भी तो गुरु हैं बहिन?

सुशीला हां, गुरु तो हैं, पर इन्होंने संसार नहीं छोड़ा है। जब कि सन्त सतियों ने संसार छोड़ दिया है। उन्होंने तो धन और कुटुम्ब से अपना मुँह मोड़कर संयम ले लिया है। इसलिये वे सारे जगत के गुरु

हैं। ऐसे मुनिराजों को भक्ति पूर्वक विधि सहित वन्दना नमस्कार करना चाहिये।

१—वंदना पाठ सुनाओ।
२—गुरु वन्दना किस तरह करनी चाहिये ?



पाठ ४

शिष्टाचार की बातें

१ अपने से बड़े या महमान के आने पर उनका स्वागत खड़े होकर करना चाहिये, और जब वे जाने लगें तब भी खड़े हो जाना चाहिये। जाते समय कुछ दूर तक हो सके तो साथ जाना चाहिये।

२ जब तुम किसी (परिचित) आदमी से मिलो तो पहले हाथ जोड़कर 'जयजिनेन्द्र' कहो, और फिर कुछ बातें करनी हो तो करो।

३ जब दो आदमी बात कर रहे हों तो बिना पूछे बीच में नहीं बोलना चाहिये

४ कभी किसी के यहां भोजन करना हो तो सबसे पहले खाने की जल्दी मत करो।

५ लिखते समय कलम से जमीन पर स्याही न छिड़को, और न उसको सिर के बालों से पोंछो।

६ अपने भाई बहिनों से कभी नहीं लड़ना चाहिये।

पाठ ५

खादी

आज कल लड़कियों को महीन कपड़े पहनने का बड़ा शौक रहता है, लेकिन यह याद रखना चाहिये कि जो कपड़े महीन होते हैं और कल कारखानों में तैयार किये जाते हैं, उनमें चमकाहट और सफाई के लिये चर्बी लगाई जाती है। यह चर्बी हजारों गायें, भैंसें आदि पालतू जानवरों को मार कर तैयार की जाती है और फिर उन कपड़ों पर लगाई जाती है। ऐसे कपड़ों को पहनने में पाप होता है। रेशम के कपड़ों में तो और भी अधिक हिंसा होती है। वह तो कीड़ों को मार कर ही तैयार किया जाता है इसलिये उसे तो छूना भी महापाप है। ऐसे महीन और चर्बी वाले वस्त्र पहनने से सारा शरीर नंगा दिखाई देता है, जैसे कि शरीर पर कपड़ा ही न हो। इससे अधिकांश स्त्रियां अपनी लज्जा छोड़कर बेशर्म हो जाती हैं। इसलिये हमेशा खादी के

मोटे और मोटे कपड़े पहनना चाहिये। इससे लज्जा और धर्म दोनों की रक्षा होती है। खादी शरीर को ठंड और गर्मी से बचाती है। यह गरीबों को रोटी देती है। अगर आज हमारे देश के तमाम लोग खादी पहनने लग जायें तो हिन्दुस्तान में कोई आदमी भूख से नहीं मरे। सब आराम से अपना जीवन बिता सकते हैं। इसलिये प्यारी कन्याओं! तुम बचपन से खादी पहना करो जिससे तुम बड़ी होने पर अपने कुटुम्ब के लोगों पर भी अपना असर डाल सको। इसी में तुम्हारे धर्म और देश की भलाई है।

१—चर्बी के वस्त्र पहनने में क्या हानियाँ हैं?
२—खादी पहनने से क्या लाभ होते हैं।
३—तुम कैसे कपड़े पहनोगी?



पाठ ६

सादगी

जीवन बहुत बनाओ सादा।
तड़क भड़क में पड़ो न ज्यादा।
खाना सादा पीना सादा।
इस दुनिया में रहना सादा।

चोली सादी भूषण सादा ।
धोती सादी जूता सादा ।

हँसना सादा रोना सादा ।
नहीं दिखाना होना ज्यादा ।

बर्तन सादे बिस्तर सादा ।
भीतर बाहर सब घर सादा ।

खाना और पहनना सादा ।
जब तक जीना रहना सादा ।

चलना और निबहना सादा ।
मुँह से जो कुछ कहना सादा ।

सबसे मिलना जुलना सादा ।
फैशन में मत घुलना ज्यादा ।

—जैन शिक्षा

पाठ ७

तन्दुरुस्ती की बातें

१ सदा सूर्योदय से पहले उठना चाहिये ।

२ प्रात काल सूर्य के सामने बैठकर सूर्य स्नान करने से शरीर स्वस्थ रहता है ।

३ नींद से जगकर तुरन्त खड़ा नहीं हो जाना चाहिये। कुछ समय तक प्रभु का स्मरण जरूर करना चाहिये। इससे चित्त प्रसन्न रहता है।

४ अगर सिर दुखता हो या बुखार आता हो तो हल्का भोजन या उपवास आदि कर लेना चाहिये। इससे रोग दूर हो जाते हैं।

५ सदा घर के बाहिर स्वच्छ हवा में खेलना और घूमना चाहिये।

६ खुले पाव चलने से क. रोग नष्ट हो जाते हैं। इसलिये खुले पैर चलने की आदत डालनी चाहिये।

७ शाम को खाने के बाद कुछ टहलना चाहिये। इससे भोजन हजम हो जाता है।

८ दिन छिपने के बाद नहीं खाना चाहिये।

९ बुखार के समय कोई मेहनत का काम नहीं करना चाहिये।

१० नशीली चीजों का सेवन नहीं करना चाहिये।

११ बिना छाना जल नहीं पीना चाहिये।

१२ मन को सदा प्रसन्न रखना चाहिये।

१३ बिना भूख के नहीं खाना चाहिये, और भूख से ज्यादा भी नहीं खाना चाहिये।

१४ अधिक मिर्च मसाले और खटाई से बचना चाहिये।

१५ दिन को नहीं सोना चाहिए, इससे शरीर में सुस्ती आती है।

१६ सिनेमा नहीं देखना चाहिए, इससे आखें खराब होती हैं।

१७ बिजली के सामने अधिक देर तक नहीं पढ़ना चाहिए।

१८ रात में अधिक जागरण नहीं करना चाहिए।

१९ आँखों का तेज बढ़ाने के लिए हरियाली के सामने देखते रहना चाहिए।



पाठ ८

रात्रि-भोजन

रात में खाना पाप है। क्योंकि रात में खाने से जीवों की हिंसा होती है। बहुत से आदमियों की आदत होती है कि भोजन हो जाने पर भी वे रात को ही खाते हैं उनको रात में खाना ही अच्छा लगता है। किन्तु इसका परिणाम कभी बहुत बुरा होता है।

एक समय की बात है कि एक सेठ के यहां प्रीति भोज था। जिसमें सैकड़ों मनुष्य जीमने के लिए आये हुए थे।

शाम होते ही जीमना शुरु हुआ। शौकीन लोग मग के रग में जीमने लगे। सीरा और पूडी के साथ राइता और अमचूर का शाक था। एक भाई ने मीठे से ऊब कर अमचूर पर हाथ उठाया, और पूडी पर दो एक अमचूर ले मुह में धरने लगा। इतने में पास बैठे हुए दूसरे भाई की उस पर नजर पड़ी। उसने कहा-अजी, तुम्हारे हाथ में यह क्या लटक रहा है? डोरी तो नहीं है? जरा देखो तो सही। यह कह कर उसने उस डोरी को खींच निकाला। रोशनी में जाकर देखा तो मालूम हुआ कि यह तो चूहे की पूंछ है। भाई साहब तो अमचूर के साथ उसे भी मुँह में रखने जा रहे थे। यह सुनकर सबको बडी घृणा हुई, और बिना खाये ही सब लोग उठ गये। इस तरह रात के भोजन में पता नहीं चलने से कई जानवर भी खाने में आ जाते हैं। जिससे मनुष्य को कई तरह की बीमारियां भुगतनी पडती हैं। इसलिये प्यारी कन्याओं! अगर तुम स्वस्थ और सुखी रहना चाहती हो तो धर्म के अनुसार चलो और रात को कभी मत खाओ।

१—रात को खाने से क्या हानि होती है?
२—सेठजी का प्रीति भोज कैसा रहा?



पाठ ९

दस बाते

प्यारी बहिनों! आज मैं कुछ ऐसी बातें बताता हूँ कि जिन पर अगर तुमने ध्यान दिया, तो तुम अपना जीवन शान्त और सुन्दर बना सकोगी।

पहली बात--हमेशा सवेरे जल्दी उठा करो। उठकर कुछ समय भगवान का ध्यान करो। इससे तुम्हारा मन प्रसन्न रहेगा। फिर माता पिता और गुरु की वन्दना-नमस्कार करो। जहाँ तक हो सके घर में टट्टी मत जाओ। इससे तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

दूसरी बात--सब काम मन लगाकर करो। मन लगाकर काम करने से कोई काम खराब नहीं होता।

तीसरी बात--किसी से लडाई झगड़ा मत करो। लडाई का फल बहुत खराब होता है।

चौथी बात--सब के साथ प्रेम से रहो और मीठी बोली बोला करो। मधुर वचन बोलने वाले को सब प्यार करते हैं।

पाचवी बात--किसी जीव को दुख मत पहुंचाओ। याद रखो सब जीव तुम्हारे ही समान हैं।

छठी बात—सन्त मुनिराजों की तन मन से सेवा करो। सेवा का फल मेवा से भी मीठा होता है।

सातवीं बात —कभी आलस्य मत करो। आलसी कोई काम नहीं कर सकता।

आठवीं बात—नशीली चीजों का कभी सेवन मत करो। इससे तन और धन दोनों का नाश होता है।

नवमी बात—बिना पूछे किसी की चीज मत उठाओ। बिना पूछे किसी की चीज उठाने वाला चोर समझा जाता है।

दसवीं बात—सदा सच बोलो, और धर्म पर विश्वास रखो। इससे तुम्हारी उन्नति होगी।



पाठ १०

विनय

[श्री महावीर जैन कन्या भवन का कमरा, जिसमें कुछ लड़कियां आपस में बात चीत कर रही हैं]

कलावती—(अपनी सहपाठिकाओं से) पहले यह तो बताओ कि आज के लिये क्या सोचा ?

तारा—क्या सोचना था कलावती ?

कलावती—अरे, यही सोचना था कि बहिनजी से क्या प्रश्न पूछोगी।

सुभद्रा—(मुँह पर हाथ रखकर) हां, यह तो सोच लेना चाहिये था ?

शान्ति (सुभद्रा से) तो आज आपने ही सोच लिया होता। बातें बनानी तो खूब आती हैं, पर कभी कुछ पूछा भी ? चुपचाप रानी साहिबा की तरह आकर बैठ जाती हो।

कलावती—अरे, तुम दोनों तो लड़ने ही लग गईं। हां (प्रभावती से) तुमने कुछ सोचा प्रभावती ?

प्रभावती—हां, आज हम विनय के विषय में पूछेंगी कलावती।

तारा—ठीक है ठीक। विनय किसे कहते हैं ? यह मैं पूछूंगी।

शान्ति—और माता पिता का विनय कैसे करना चाहिये ? यह मैं पूछूंगी।

कलावती—अच्छा, चुप रहो। देखो बहिनजी आ रही हैं। अब हम सब अपनी २ जगह बैठ जावें।

[सब लड़कियां अपनी २ जगह बैठ जाती हैं। अध्यापिका (बहिनजी) आती हैं। सब लड़कियां खड़ी होती हैं और जय

जिनेन्द्र करती हैं। अध्यापिका कुर्सी पर बैठती हैं। लड़कियां भी अपने २ आसन पर बैठ जाती हैं]

अध्यापिका--(लड़कियों से) हां, आज क्या पूछना चाहती हो?

प्रभावती--बहिनजी, आज हम विनय के विषय में कुछ पूछना चाहती हैं।

अध्यापिका--(हसती हुई) बहुत अच्छा प्रभावती, पूछो।

तारा--(बीच में ही बोल उठी) बहिनजी, विनय किसे कहते हैं?

अध्यापिका--अपने से बड़ों के प्रति नरमाई रखना, उनको प्रणाम करना और उनकी आज्ञा मानना ही विनय कहलाता है।

शान्ति--और माता पिता का विनय कैसे करना चाहिये?

अध्यापिका--रोज सबेरे माता पिता को प्रणाम करना उनकी बात मानना और उनके आगे नम्रता रखना ही माता पिता का विनय है।

कलावती--मुनिराज का विनय कैसे करें बहिनजी?

अध्यापिका--रोज सबेरे सूरज निकलने से पहिले जहां सन्त मुनिराज ठहरे हुए हों, वहां जाकर विधि पूर्वक वन्दना करना, उनके आगे नम्रता से

बैठना और आदर के साथ बातचीत करना सन्त मुनिराज का विनय है।

प्रभावती—धर्म के प्रति विनय कैसे किया जाय ?

अध्यापिका—धर्म की किताबों में कही हुई बातों के अनुकूल चलना, दया, सत्य और ब्रह्मचर्य का पालन करना, चोरी नहीं करना और झूठ को छोड़ना कहना ही धर्म का विनय है।

कमला—अब यह बताइये कि ईश्वर का विनय कैसे करें ?

अध्यापिका—ईश्वर का रोज उठते समय और सोते समय पवित्र मन से नाम लेना, अपने किये हुए पापों के लिये माफी मांगना और नये पाप या बुरे काम नहीं करने का नियम लेना ही ईश्वर का विनय है।

[घंटी बजती है]

अध्यापिका—लो घंटी बज गई, और कुछ पूछना बाकी है ?

प्रभावती—चलो अच्छा हुआ। घंटा भी ठीक समय पर बजी। हमें या अब कुछ पूछना नहीं है बहिनजी।

(सब हंसती हैं)

[अध्यापिका खड़ी होती है लड़कियाँ भी खड़ी हो जाती हैं। अध्यापिका कमरे से बाहिर चली जाती है लड़कियाँ हिन्दी याद करने लग जाती हैं]

१—विनय किसे कहते हैं ?
२—सन्तों का विनय कैसे करना चाहिये ?
३—अपने धर्म के प्रति कैसा विनय करना चाहिये ?



पाठ ११

अठारह पाप

१ किसी जीव को मारना पाप है।
२ झूठ बोलना पाप है।
३ चोरी करना या बिना आज्ञा के दूसरे की चीज उठा लेना पाप है।
४ विषय का सेवन करना पाप है।
५ जरूरत से अधिक संग्रह करना पाप है।
६ क्रोध करना पाप है।
७ मान (अहङ्कार) करना पाप है।
८ छल कपट करना पाप है।
९ लोभ करना पाप है।

१० मोह करना पाप है।
११ किसी से द्वेष करना पाप है।
१२ लड़ाई करना पाप है।
१३ दूसरे पर झूठा कलंक लगाना पाप है।
१४ चुगली करना पाप है।
१५ निंदा करना पाप है।
१६ पाप में खुशी मनाना और धर्म काम में उदासी रखना पाप है।
१७ कपट सहित झूठ बोलना पाप है।
१८ खोटी श्रद्धा रखना पाप है।

पाप से आत्मा का पतन होता है। इसलिये इन अठारह पापों से सदा बचते रहना चाहिये।

१—पाप कितने हैं?
२—क्रोध, पाप क्यों है?

पाठ १२

सन्त वाणी

नमन पंच परमेष्ठी को, शुद्ध मंगल दातार।
सकल विघ्न का नाश कर, देवे शान्ति अपार ॥ १ ॥
विनय धर्म का मूल है, विनय ज्ञान का मूल।
सम्पत्ति सुख अरु गुरु कृपा, विनय बिना निर्मूल ॥ २ ॥

सबसे पहले प्रेम है, उसके ऊपर नेम ।
जा घर प्रेम न नेम है, वा घर कुशल न क्षेम ॥ ३ ॥

क्रोध सरीखा विष नहीं, दया सुधा सम जान ।
मान भयंकर शत्रु है, उद्यम मित्र सुजान । ४ ।

माया भय की खान है, शरण सत्य को मान ।
लोभ दुःख का मूल है, सुख सन्तोष प्रधान ॥ ५ ॥

झूठ कभी ना बोलिये, झूठ पाप को मूल ।
झूठे से कोई जगत में, करे प्रतीत न भूल ॥ ६ ॥

सत मत छोडो मानवी, लक्ष्मी चौगुनी होय ।
सुख दुख रेखा कर्म की, टालीं टले न कोय ॥ ७ ॥

शील रतन मोटो रतन, सब रतनों की खान ।
तीन लोक की सम्पदा, रहे शील में आन ॥ ८ ॥

अपना रूखा खाय के, ठंडा पानी पीव ।
देख पराई चौपडी, मत तरसाना जीव ॥ ९ ॥

गो धन गज धन रत्न धन, कचन खान सुखान ।
जब आने सन्तोष धन, सब धन धूल समान ॥ १० ॥

कठिन शब्दार्थ—मुद = आनन्द, निमूल = व्यर्थ, उद्यम = परिश्रम,
प्रतीत = विश्वास, सम्पदा = लक्ष्मी,
कंचन = सोना ।



पाठ १३

नव-तत्व

प्यारी कन्याओ ! हमारे धर्म मे नव-तत्व बताये गये है। आज तुमको वही नव तत्व बताए जायगें, जिनको जानना बहुत जरूरी है। वे इस प्रकार हैं—

१ जीव तत्व—जो सुख दुख को जानें और जिसमें चेतना हो उसे जीव कहते हैं।

२ अजीव तत्व—जिसको सुख दुख का ज्ञान न हो, ऐसे जड़पदार्थ को अजीव कहते हैं।

३ पुण्य तत्व—अच्छे काम, जिनसे आत्मा को सुख मिले, उसे पुण्य कहते हैं।

४ पाप तत्व—बुरे काम, जिनसे आत्मा को दुख हो, उसे पाप कहते हैं।

५ आश्रव तत्व—जिससे आत्मा में अच्छे और बुरे कर्म आवें, उसे आश्रव कहते हैं।

६ संवर तत्व—जिससे नये कर्मो का आना रुके, उसे संवर कहते हैं।

७ निर्जरा तत्व—आत्मा से लगे हुए कर्म जिससे दूर हो, उसे निर्जरा कहते हैं।

८ बध तत्व—आत्मा के साथ कर्मों के सम्बन्ध को बन्ध कहते हैं।

९ मोक्ष तत्व—आत्मा का सब कर्मों से छूट जाना और अनन्त सुख को पाना मोक्ष कहाता है।

१ तत्व कितने हैं ? नाम कौन से ?
२ संवर और आस्रव में क्या भेद है ?
३ मोक्ष तत्व किसे कहते हैं ?



पाठ १४

जीव-अजीव

शान्ता—सुभद्रा, क्या तुम बता सकती हो कि दुनिया में कितनी तरह के पदार्थ हैं ?

सुभद्रा—बहिन, ससार में तो कई तरह के पदार्थ हैं। किन किन के नाम बताऊं ! सोना, चादी, टेबल, कुर्सी, गाय, घोडा भैंस, बकरी आदि अगणित पदार्थ हैं। भला, उन सबको कोई कैसे बता सकता है।

शान्ता—हां, सचमुच ससार के पदार्थ अगणित हैं, किन्तु ज्ञानियों की तरकीब से वे सब थोडे में कहे जा

सकते हैं। उन लोगों ने संसार के सब पदार्थों को दो प्रकार में ले लिये हैं।

सुभद्रा—क्या सब पदार्थ दो ही प्रकार के हैं? जरा बताओ तो?

शान्ता—लो सुनो! एक तो वे जिनमें जान है, और जो समझने, विचारने व देखने की ताकत रखते हैं। खुद एक जगह से दूसरी जगह चल फिर सकते हैं। जैसे मनुष्य, बैल, घोड़ा, चींटी आदि। इनको जीव कहते हैं। और दूसरे अजीव पदार्थ-जिनमें जान नहीं होती है, उनको जड़ कहते हैं। जैसे-ईंट, पत्थर लकड़ी आदि।

सुभद्रा—ओहो! यह तो सचमुच बड़ी खूबी की बात है। जीव और अजीव में तो सारी दुनिया आ गई बहिन!

शान्ता—हां, पर जरा और सुनो। जीव भी दो तरह के होते हैं।

सुभद्रा—वे कौन कौनसे?

शान्ता—यह कल बताऊँगी। आज इतना ही बहुत है।

सुभद्रा—बहुत अच्छा बहिन, मैं कल इसी समय आपके पास आऊंगी। जयजिनेन्द्र!

शान्ता—जयजिनेन्द्र!

१ पदार्थ कितनी तरह के हैं ?
२ जीव और अजीव किसे कहते हैं ?
३ बताओ इनमें से कौन जीव है और कौन अजीव
पुस्तक, पेंसिल, दवात कुर्सी, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, खरगोश, टोपी, रूमाल, घड़ी, मोटर और रेल ।



पाठ १५

त्रस-स्थावर

सुभद्रा—बहिन, कल आपने बताया था कि जीव दो तरह के होते हैं ।

शान्ता—हां, एक तो वे जो संसार में फिर कभी जन्म मरण नहीं करते हैं । जैसे भगवान महावीर । ऐसे जीवों को मुक्त या सिद्ध जीव कहते हैं । और दूसरे वे जो संसार में ही जन्म मरण करते रहते हैं । जैसे हम और तुम । ऐसे जीवों को संसारी जीव कहते हैं ।

सुभद्रा—क्या संसारी जीवों के भी कोई भेद है ?

शान्ता—हां, संसारी जीव भी दो तरह के होते हैं ।

सुभद्रा—वे कौन कौन से ?

शान्ता—एक तो वे जो चल फिर सकते हैं। अर्थात् ठन्ड से धूप में आ सकते हैं और धूप से छाया में जा सकते हैं। उन्हें त्रस जीव कहते हैं। जैसे-मक्खी, मच्छर, गाय, बैल आदमी आदि। दूसरे वे हैं जो पैदा होते हैं, खाते हैं, पीते हैं बढ़ते हैं, परन्तु अपने आप चल फिर नहीं सकते हैं। ऐसे जीवों को स्थावर जीव कहते हैं। जैसे-जमीन, पेड़, आग, हवा, और पानी के जीव। इन जीवों के सिर्फ एक इन्द्रिय यानी शरीर ही होता है। दूसरी इन्द्रियां नहीं होती हैं। इस प्रकार त्रस और स्थावर जीवों में संसार के सब जीव आजाते हैं। लो यह दोहा याद कर लो। इससे अपना पाठ जल्दी याद हो जायगा।

जीव भेद संसार में, त्रस अरु स्थावर दोय।
त्रस वे जो चल फिर सकें, स्थावर जो थिर होय॥

ये सब जीव चार गति में बटे हुए हैं, लेकिन यह कल बताऊँगी। आज इतना ही बहुत है।

सुभद्रा—अच्छा बहिन, जयजिनेन्द्र।

शान्ता—जयजिनेन्द्र!

१ जीव कितनी तरह के हैं?

२ संसारी जीव किसे कहते हैं?

३ त्रस और स्थावर में क्या भेद है ?

४ कुछ स्थावर जीवों के नाम बताओ।



पाठ १६

चार गति

सुभद्रा—बहिन ! कल आपने बताया था कि ये संसारी जीव चार गति में रहते हैं। अब यह बताइए कि वे चार गति कौन कौनसी हैं ?

शान्ता—हां, लेकिन उससे पहले यह जान लो कि संसारी जीव मरकर जहाँ जाते हैं, उसको गति कहते हैं। वे चार हैं। नरक गति २ तिर्यंच गति ३ मनुष्य गति ४ और देव गति। संसार के सभी जीव इन चार गतियों में समा जाते हैं, और सब अपने २ कर्मानुसार इन चारों में भटका करते हैं

सुभद्रा - बहिन, नरकगति में कौन जीव जाते हैं ?

शान्ता—जो जीव अत्यन्त पाप कर्म करते हैं, और निरपराधी जीवों को जान बूझकर मारते हैं, वे नरक में उत्पन्न होते हैं। उनकी गति नरकगति कहलाती है। नरक पाताल में है, जहाँ दुख ही दुख होता है।

सुभद्रा—तिर्यंचगति किन कर्मों से मिलती है ?

शान्ता—जो जीव झूठ बोलते हैं, छल, कपट करते हैं, व्यापार में धोखा करते हैं, तोलते समय ज्यादा कम तोलते हैं, वे मरकर तिर्यंचगति में पैदा होते हैं। जैसे-कुत्ता, कबूतर, सिंह, भालू, और पृथ्वी, जल, वनस्पति आदि के एकेन्द्रिय जीव। ये सब तिर्यंच जीव हैं। इनके स्थान को तिर्यंचगति कहते हैं।

सुभद्रा—मनुष्यगति में कौन पैदा होते हैं?

शान्ता—जो जीव स्वभाव से शान्त विनयी और दयालु होते हैं, वे मरकर मनुष्य होते हैं। मनुष्य जाति में उत्पन्न होना ही मनुष्यगति कहलाती है।

सुभद्रा—बहिन, देवगति किन जीवों को मिलती है?

शान्ता—जो जीव अत्यन्त शुभ कार्य करते हैं। यानी जो तपस्या और मुनिधर्म का पालन करते हैं, वे मरकर देवता बनते हैं। उनकी गति को देवगति कहते हैं। आकाश में चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, तारा आदि जो विमान दिखाई देते हैं, उनमें रहने वाले देवगति के ही जीव हैं। इन चारों गति से जो जीव छूट जाते हैं, वे जन्म मरण से रहित होकर मोक्ष में चले जाते हैं। मोक्ष में रहने वाले सिद्ध कहाते हैं। वे फिर दुनिया में कभी नहीं पैदा होते। ये चार गति वाले जीव इन्द्रिय वाले होते

हैं। इन्द्रियाँ पाच हैं। जो तुमसे कल के पाठ म
बताऊँगी।

सुभद्रा—अच्छा, जयजिनेन्द्र।

शान्ता—जयजिनेन्द्र

१ गति किसे कहते हैं ? वे कितनी हैं।
२ तिर्यंचगति किन कारणों से मिलती है ?
३ सिद्ध किसे कहते हैं ?



पाठ १७

पांच इन्द्रियां

शान्ता—सुभद्रा, आज तो बड़ी जल्दी आ गई हो ?

सुभद्रा—नहीं बहिन, देखो न घड़ी में ग्यारह बज चुके हैं।

शान्ता—क्या ग्यारह ! मैं तो दस ही समझ रही थी। आओ, बैठो। हां, कल आपने पाच इन्द्रिया बताने को कहा था।

शान्ता—आजकल तो तू बड़ा ध्यान रखती है सुभद्रा ! मालूम होता है इन बातों में तुझे बड़ा मजा आ रहा है।

सुभद्रा—सच बात तो यह है बहिन कि आपने ये बातें मुझे एकदम नई बताई हैं, जिनको जानकर मुझे बड़ा

मज़ा आने लगा है। अब इच्छा भी यही रहती है कि आपसे कुछ और नई नई बातें सुनूं।

शान्ता-बहुत अच्छा सुभद्रा! तुम जानना चाहती हो तो मैं तुम्हें बहुत सी बातें बताऊँगी। पहिले यह जान लो कि पांच इन्द्रियां कौन २ सी हैं?

सुभद्रा-हां, बताइये तो?

शान्ता-पहली स्पर्श इन्द्रिय है। इसे शरीर भी कहते हैं। शरीर से हम किसी चीज़ को छूकर ठंडे और गरम का ज्ञान करते हैं। जैसे आग गरम है, और पानी ठंडा है, यह जानना शरीर का काम है।

सुभद्रा-और दूसरी?

शान्ता-दूसरी रसना इन्द्रिय है। जिसके द्वारा हम मीठे, खट्टे, कड़वे और चरपरे स्वाद को मालूम करते हैं। जैसे नीबू खट्टा है, और आम मीठा है। यह मालूम करना रसना इन्द्रिय का काम है। इसे जीभ भी कहते हैं।

सुभद्रा-तीसरी इन्द्रिय कौनसी है?

शान्ता-तीसरी घ्राण इन्द्रिय है। जिसे नाक भी कहते हैं। इसके द्वारा हम सुगन्ध और दुर्गन्ध का पता लगाते हैं। जैसे-कस्तूरी से सुगन्ध आती

घासलेट से दुर्गन्ध। इस प्रकार गन्ध मालूम करना नाक का काम है।

सुभद्रा–और चौथी ?

शान्ता–चौथी चक्षु इन्द्रिय है। जिसके द्वारा हम देखते हैं और देखकर काले, पीले नीले, सफेद आदि रंगों का ज्ञान करते हैं। जैसे-कोयल काली है, और हंस सफेद। यह जानना चक्षु इन्द्रिय का काम है। इसे आंख भी कहते हैं।

सुभद्रा–अब पांचवी इन्द्रिय कौनसी है बहिन ?

शान्ता–पांचवी श्रोत्र इन्द्रिय है। जिसे कान भी कहते हैं। कान से हम सुनते हैं और सुनकर यह मालूम करते हैं कि यह स्वर तो मधुर है, और यह खराब। जैसे कोयल की आवाज प्रिय है और कौवे की अप्रिय। यह जानना कान का काम है। यह पांचों इन्द्रियों का पाठ तो हो गया, पर यह बताओ कि तुम कुछ समझी या नहीं।

सुभद्रा–बहिन, मैं तो बहुत आसानी से समझ गई हूँ।

शान्ता–तो ठीक है। समय भी हो गया है। आगे कल बताऊँगी।

सुभद्रा-बहुत अच्छा, जयजिनेन्द्र।

शान्ता–जयजिनेन्द्र।

१ इन्द्रियाँ कितनी हैं ? नाम बताओ।
२ चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं ?
३ श्रोत्रेन्द्रिय से तुम क्या करती हो।

पाठ १८

इन्द्रियों की पहिचान

शान्ता-सुभद्रा कल पांच इन्द्रियां कौन कौन सी बताई थी ?

सुभद्रा-कल आपने १ स्पर्श इन्द्रिय (शरीर) २ रसना इन्द्रिय (जीभ) ३ घ्राण इन्द्रिय (नाक) ४ चक्षु इन्द्रिय (आंख) ५ और श्रोत्र इन्द्रिय (कान) ये पांच इन्द्रियां बताई थी।

शान्ता-बहुत अच्छा सुभद्रा, तुम अपना पाठ ध्यान देकर सुनती हो, और अच्छी तरह समझकर याद करती हो। मैं तुम्हारे से बहुत खुश हूँ। लो, आज मैं तुम्हें यह बताती हूँ कि इन इन्द्रियों वाले जीव की पहिचान कैसे करनी चाहिये।

सुभद्रा-बहिन, मैं भी यही पूछना चाहती थी। आपने तो पहले ही मेरी बात जान ली। हां, अब

शान्ता-सुनो, जिनके सिर्फ शरीर ही हो, जो चल फिर नहीं सकते हों, एक ही जगह पड़े रहते हों, उन्हें एकेन्द्रिय कहते हैं। जैसे कच्ची मिट्टी के जीव, पानी के जीव, अग्नि के जीव, हवा और वनस्पति के जीव। ये सब स्थावर जीव एकइन्द्रिय वाले हैं।

सुभद्रा-और दो इन्द्रिय वाले कौन हैं?

शान्ता-जिनके शरीर और मुख ये दो इन्द्रिया हों, उन्हें दो इन्द्रिय वाले या बेइन्द्रिय कहते हैं। जैसे लट, अलसिया, शंख इत्यादि।

सुभद्रा-बहिन, तीन इन्द्रिय वाले किसे समझना चाहिये।

शान्ता-जिनके शरीर, मुख, और नाक ये तीन इन्द्रिया हों, उन्हें तीन इन्द्रिय वाले या तेइन्द्रिय समझना चाहिये। जैसे कीड़ी, मकोड़ी, जूं, खटमल आदि।

सुभद्रा-अब चार इन्द्रिय वाले बताओ।

शान्ता जिनके शरीर, मुख, नाक और आख ये चार इन्द्रिया हों, उन्हें चतुरिन्द्रिय या चार इन्द्रियवाले कहते है, जैसे मक्खी, मच्छर, भँवरा, टिड्डी आदि।

सुभद्रा-और पाच इन्द्रियवाले किसे समझना चाहिये?

शाता-जिनके शरीर, मुख, नाक, आख और कान ये पाचों

हा इन्द्रिया हों, उन्हें पचेन्द्रिय या पाच इन्द्रिय वाले समझना चाहिये। जेसे-मनुष्य देवता, गाय, बेल, कबूतर आदि । सुभद्रा, तुम समझी या नहीं ?

सुभद्रा—जी हां, मैं तो बहुत अच्छी तरह से समझ गई हूँ।

शान्ता—तो बताओ कुत्ता एकेन्द्रिय है या बेइन्द्रिय ?

सुभद्रा—बहिन, कुत्ते के तो शरीर, मुख, नाक, आख और कान ये पाचों ही इन्द्रियों होती हैं, इसलिये वह पचेन्द्रिय है।

शान्ता—बहुत ठीक। और चींटी ?

सुभद्रा—चींटी के शरीर, मुख, और नाक ही होते हैं इसलिये तेइन्द्रिय होनी चाहिये। क्या बहिन ठीक है न ?

शान्ता—हा, ठीक है सुभद्रा। तुम बहुत अच्छी [illegible] से समझ गई हो। अब एक दोहा [illegible] कुछ चौपाइया सुनाती हूँ। सुनो—

स्थावर इन्द्रिय एक युत, भेद [illegible]
पृथ्वी, जल, अग्नि तथा, वायु [illegible]

हो जिसके शरीर मुख [illegible]
बेइन्द्रिय कहलावे [illegible]

तन मुख और नाक जो पाते ।
वे त्रस तेइन्द्रिय कहलाते ।
तन मुख नाक आंख जो राखे ।
चौ इन्द्रिय सब उनको भाखे ।
तन मुख नाक आँख अरु काना ।
पचेंद्रिय त्रस जीव बखाना ।

सुभद्रा—बहिन, इसमें तो मेरा सारा पाठ ही आ गया ?

शान्ता—हां, इनको याद कर लेना सुभद्रा । आज समय बहुत हो गया है । जाओ, माताजी तुम्हारा इन्तजार कर रही होंगी ।

सुभद्रा—बहिन, माताजीने तो आज आपको भी बुलाया है ।

शान्ता—क्यों सुभद्रा ?

सुभद्रा—यह तो मैं नहीं जानती बहिन ।

शान्ता—अच्छा तो चलो, मैं भी चलती हूँ ।

प्रश्न—१ तेइन्द्रिय किसे कहते हैं ?
२ मुर्गा, बन्दर, तोता, सांप और हिरन के कितनी इन्द्रियां होती हैं ?
३ चींटी के जब आंख नहीं होती है, तो वह शक्कर के पास कैसे पहुंच जाती है ?



पाठ १०

छह काय

शान्ता—सुभद्रा, सन्त पुरुषों ने बताया है कि संसार के सब जीव छह तरह की काय में बँटे हुए हैं। काय यानी शरीर। जिसमें एक या अनेक जीव रहते हों उसे शरीर कहते हैं। अथवा एक तरह के शरीर समूह को काय कहते हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ पृथ्वीकाय—पृथ्वी ही जिनका शरीर है, ऐसे मिट्टी के जीवों को पृथ्वीकाय कहते हैं।

२ अपकाय—पानी ही जिनका शरीर है, ऐसे पानी के जीवों को अप्काय कहते हैं।

३ तेउकाय—अग्नि ही जिनका शरीर है, ऐसे अग्नि के जीवों को तेउकाय कहते हैं।

४ वाउकाय—हवा ही जिनका शरीर है, ऐसे हवा के जीवों को वाउकाय कहते हैं।

५ वनस्पतिकाय—वनस्पति ही जिनका शरीर है, ऐसे शाक, भाजी के जीवों को वनस्पतिकाय कहते हैं।

६ त्रसकाय—जो धूप से ठंड में और ठंड से धूप में आ जा सकें, ऐसे शरीर वाले बेइन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के चलने फिरने वाले जीवों को त्रसकाय कहते हैं।

सुभद्रा—बहिन पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति इन सब में अगर जीव हैं तो फिर कोई भी श्रावक हिंसा से नहीं बच सकता। क्योंकि इनके बिना किसी का काम ही नहीं चलता है।

माता—हाँ, तुम्हारा कहना ठीक है, लेकिन ये सब बिना जीव के भी होते हैं। उनको उपयोग में लाने से हिंसा नहीं होती है। जैसे पृथ्वी का ऊपरी भाग, जहाँ मनुष्य चलते फिरते हैं और धूप आदि भी गिरती है, वहाँ पृथ्वी के जीव नहीं रह पाते हैं। इसी तरह गर्म किया हुआ अथवा खार आदि से मिला हुआ पानी भी निर्जीव होता है। ईंट, गधे आदि में रही हुई अग्नि भी निर्जीव होती है। बाहिर के आघात से हवा भी निर्जीव होती है। नहीं उगने वाली, पीसी हुई तथा पकाई हुई साग भाजी आदि वनस्पति भी जीव रहित होती है। इस प्रकार जो संयम से रहते हैं, उनका काम बिना हिंसा के भी चल सकता है।

प्रश्न—१ काय किसे कहते हैं और वे कितनी हैं?
२ तुम किस काय में हो?

पाठ २०

पर्याप्ति छह

शान्ता—सुभद्रा, कल तुमको छह काय बताई थी। छह काया के सब जीव पज्जत्ति (पर्याप्ति) प्राण, योग और उपयोग वाले होते हैं। कोई भी संसारी जीव इनके बिना नहीं रहता है।

सुभद्रा—तो यह बताइये कि पर्याप्ति किसे कहते हैं और वे कितनी हैं।

शान्ता—जीव उत्पन्न होते समय आहार आदि ग्रहण करने की जिन शक्तियों को पूर्ण करता है, उनको पर्याप्ति कहते हैं। वे छह हैं—

१ आहार पर्याप्ति—आहार लेने की शक्ति।
२ शरीर पर्याप्ति—शरीर
३ इन्द्रिय पर्याप्ति—इन्द्रिया
४ श्वासोश्वास पर्याप्ति—श्वास लेने व छोड़ने की शक्ति।
५ भाषा पर्याप्ति—बोलने की शक्ति।
६ मन पर्याप्ति—विचारने की शक्ति।

इन छह पर्याप्तियों को जीव अपनी योग्यतानुसार पूरी कर लेता है तब वह पर्याप्त कहलाता है।

प्रश्न—१ पर्याप्ति किसे कहते हैं ?
२ वे कितनी हैं ? नाम बताओ ?

पाठ २१

प्राण दस

सुभद्रा—बहिन, कल आपने कहा था कि संसारी जीव पज्जत्ति, प्राण, जोग और उपयोग वाले होते हैं। इनमें से पर्याप्ति का स्वरूप तो आपने बता दिया। अब यह समझाइये कि प्राण किसे कहते हैं ?

ज्ञाता—जिनके बल से जीव जीता है, उसको प्राण कहते हैं। प्राण दस हैं—

१ श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण २ चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण
३ घ्राणेन्द्रिय बलप्राण ४ रसनेन्द्रिय बलप्राण
५ स्पर्शेन्द्रिय बलप्राण ६ मनो बलप्राण
७ वचन बलप्राण ८ काय बलप्राण
९ सासोसास बलप्राण १० आयुष्य बलप्राण

इन दस प्राणों में आयुष्य बलप्राण ही सब का मूल है। इसके बिना सब प्राण बेकार होते हैं। इससे यह समझ लेना चाहिये कि प्राण धारण करना ही जीवन है और उनका वियोग ही मरण।

प्रश्न—१ प्राण कितने हैं ?
२ प्राण किसे कहते हैं ?

पाठ २२

निर्भय महावीर

एक समय की बात है, भगवान महावीर जंगल में ध्यान धर कर खड़े थे। चारों तरफ सुनसान वन था। उस समय एक ग्वाला अपने बैलों को चराते हुए वहा आया। उसने महावीर से कहा-बाबाजी, मेरे बैल यहा चर रहे हैं, जरा देखते रहना, कहा चले न जाय। यह कह कर वह अपने काम के लिये चला गया। महावीर ध्यान में थे, इसलिये उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। कुछ समय बाद जब ग्वाला वापिस आया, तो बैल वहा नहीं मिले। वे चरते हुए आगे निकल गये थे। बैलों को न देखकर ग्वाला आग बबूला हो गया। उसने भगवान से कहा—अरे धूर्त! ढोंगी! बता मेरे बैल कहा हैं? भगवान तो ध्यान में थे। उन्होंने कुछ नहीं कहा। ग्वाले ने सोचा मेरे बैलों को छिपाने वाला यही है। इसलिये उसने क्रोध में आकर भगवान को खूब मारा पीटा। लेकिन फिर भी महावीर पर्वत के समान अचल खड़े रहे। यह देखकर ग्वाला बहुत घबराया और वहा से चला गया।

जब देवलोक के इन्द्र ने अपने ज्ञान द्वारा यह सब देखा तो उनको बहुत बुरा मालूम हुआ। वे भगवान महावीर के सामने आकर कहने लगे–'भगवान्! मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ। मेरे साथ रहने से आपको इस प्रकार का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा।'

भगवान ने उत्तर दिया-इन्द्र! मुझे ग्वाले की मार से तनिक भी दुख नहीं हुआ है। मुझे दुख तो इस बात का है कि बेचारे ग्वाले ने कर्म बांध लिये हैं। मुझे किसी की सहायता नहीं चाहिये और न किसी की सहायता से मुझे सिद्धि ही मिल सकती है इसलिये मैं आपकी सहायता नहीं चाहता। यह सुनकर इन्द्र महाराज निराश होकर अपने स्थान को चले गये।

प्रश्न—१ ग्वाले ने भगवान को क्यों पीटा?
२ इन्द्र ने भगवान से क्या कहा?
३ भगवान ने क्या उत्तर दिया?



पाठ २३

पार्श्वनाथ की दयालुता

भगवान पार्श्वनाथ तेइसवें तीर्थंकर हो गये हैं। वे बचपन से ही बड़े दयालु और प्रभावशाली थे। उनके

जन्म आज से करीब तीन हजार वर्ष पहले काशी में हुआ था। काशी नरेश अश्वसेन उनके पिता थे, और वामादेवी माता थी। एक समय की बात है कि काशी के बाहिर एक बाबाजी तपस्या कर रहे थे। लोगों में उनके तप की बड़ी तारीफ फैली हुई थी। जिसको सुनकर वामादेवी की भी इच्छा हुई कि मैं भी बाबाजी के दर्शन कर आऊँ।

पार्श्वकुमार सदा की भांति आज भी माताजी को प्रणाम करने गये। माताजी जाने की तैयारी कर रही थी। कुमार ने प्रणाम करते हुए पूछा-माताजी, आज आप कहा जारही हैं ? माता ने आशीष देते हुए कहा—कुमार, नगरी के बाहिर एक बाबाजी पधारे हुए हैं। व चारों तरफ आग जलाकर कठोर तप कर रहे हैं। इसलिये मैं भी आज उनके दर्शन करने जा रही हूँ। अगर तुम भी चलना चाहो तो चल सकते हो। माताजी के कहने पर पार्श्वकुमार भी उनके साथ हो गये। हाथी पर बैठे हुए जब पार्श्वकुमार को जाते हुए देखा, तब कई लोग उनके पीछे पीछे चलने लगे। बाबाजी लोगों की भक्ति देखकर प्रसन्न हो रहे थे।

जब चारों तरफ पार्श्वकुमार ने बड़े बड़े लक्कड़ जलाकर बीच में बैठे हुए बाबाजी को देखा, तब वे मन ही मन लोगों की बुद्धि पर हसने लगे। बोले मनुष्यों की सम

भाने के लिये उन्होंने बाबाजी से पूछा— महाराज यह आप धर्म कर रहे हैं या पाप ?

बाबाजी कुछ नाराज होकर बोले—कुमार क्या तुम तपस्या को भी पाप समझते हो ?

कुमार—नहीं महाराज, मैं सच्ची तपस्या को पाप नहीं समझता, लेकिन जिसमें बड़े २ जीवों की हिंसा होती हो, वैसे कामों में जरूर पाप मानता हूँ। आप जो धूनी जलाकर तपस्या कर रहे हैं, उसमें कई जीवों की हिंसा हो रही है।

बाबाजी लाल होकर बोले— राजकुमार, तुम मेरा अपमान कर रहे हो ?

कुमार—अपमान नहीं महाराज, मैं सच कह रहा हूँ। देखिये उस लकड़ी में जीवित सर्प जल रहे हैं।

बाबाजी ने क्रोध में आकर कुल्हाड़ा उठाया और उस लकड़ी पर दे मारा। कुल्हाड़ा लगते ही लकड़ी फट गई और भीतर से जलता हुआ नाग निकल पड़ा। यह देख कर चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सब लोग बाबाजी का उपहास करने लगे। बाबाजी इससे बहुत लज्जित हुए और कुमार पर रोष प्रकट करते हुए चलते बने। कुमार ने तड़पते हुए नाग को नवकार मंत्र सुनाया। जिसको सुनते हु

नाग ने अपनी जीवन लीला समाप्त की। वह मरकर देव-गति में नागराज धरणेन्द्र के रूप में उत्पन्न हुआ।

पार्श्वकुमार की दया से नाग की गति सुधर गई। सब लोग उनकी तारीफ करने लगे और कुमार की दया लुता के गुणगान करने लगे।

प्रश्न—१ पार्श्व कुमार के माता पिता का नाम बताओ?
२ बाबाजी से कुमार ने क्या कहा?
३ सच्ची तपस्या कैसी होती है?



पाठ २४

सती चन्दनबाला

शान्ता—सुमित्रा, क्या तुमने चन्दनबाला का नाम सुना है?

सुमित्रा—शान्ता बहन, मैंने चन्दनबाला का नाम तो सुना है, पर उसके बारे में और कुछ नहीं जानती।

शान्ता—अच्छा तो सुनो। मैं तुमको आज उसी का हाल सुनाती हूँ।

सुमित्रा—लो, दमयन्ती भी आ गई। हां, अब सुनाओ शान्ता बहिन।

माला- चन्दनबाला एक राज घराने की लड़की था। उसके पिता का नाम दधिवाहन और माता का नाम धारिणी था। महाराजा दधिवाहन राज काज में बड़े चतुर थे। महारानी धारिणी भी गृहकार्य में निपुण और गुणवन्ती थी। जैसे वह गृहकार्य में निपुण थी, वैसा ही धर्म कार्य में भी दृढ़ थी। चन्दनबाला अपने माता पिता की इकलौती सन्तान थी इसलिए बहुत लाडली थी। दोनों ही उसे बहुत प्यार करते थे। प्रेम ही प्रेम में अपनी सन्तान को कैसी शिक्षा देना चाहिये, यह बात धारिणी अच्छी तरह से जानती थी। इसलिये उसने बचपन में ही चन्दनबाला को लाड प्यार करते हुए माता पिता की सेवा करो, उनकी आज्ञा मानो, बड़ों का विनय करो आदि बातें सिखा दी थी। चन्दनबाला भी बड़ी होशियार थी। वह रोज अपने माता पिता को नमस्कार करती, और उनकी आज्ञा का पालन करती थी। अपनी माता की बातें वह ध्यान पूर्वक सुनती, और उन पर विचार करती थी। एक दिन उसने अपनी माता से पूछा–मां, कल आपने यह बताया था कि भगवान के खुश हो जाने पर सब दुख दूर हो जाते हैं, पर भगवान खुश कैसे होते हैं? यह नहीं बताया।

महाराणी धारिणी ने कहा—बेटी, जो मुसीबत में भी धर्म को नहा भूलते हैं, और धर्म पर दृढ़ रहते हैं, भगवान उनसे खुश होते हैं।

चन्दनबाला ने कहा—तो मैं भी भगवान को खुश करूंगी मा। क्या भगवान मेरे से खुश हो जायगे ?

धारिणी ने हस कर कहा—हा, बेटी हा, भगवान तुमसे जरूर खुश होंगे।

चन्दनबाला की ऐसी बातें सुनकर माता धारिणी मन ही मन बहुत खुश होती थी। कुछ बड़ी होने पर धारिणी ने अपनी लाडली बेटी को ब्रह्मचर्य का पाठ भी पढाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि चन्दनबाला ने आजीवन कुमारी रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। चन्दबाला से उसके मातापिता तो प्रसन्न थे ही, पर राज भवन की दास दासिया व छोटे बडे लोग भी उससे खुश रहते थे। सब उसका आदर सन्मान करते थे।

दमयन्ती—बहिन, चन्दनबाला तो राजकुमारी थी। इसलिये दास-दासियों को तो उसका आदर करना ही चाहिये। क्यों सुमित्रा ? इसमें कोई बड़ी बात थोड़े ही है ?

शान्ता—तुम समझी नहीं दमयन्ती। वह राजकुमारी तो थी, परन्तु उसे यह अभिमान नहीं था कि मैं

राजकुमारी हूँ। वह अपने दास दासियों को नौकरों की तरह नहीं समझती थी। उनको भी अपने भाई की तरह मानती थी। अपनी तरह उनके भी सुख दुख का ध्यान रखती थी और सबके साथ प्रेम से बोलती थी। इससे वह सबकी प्यारी बन गई थी। सब उसका आदर-सन्मान करते थे। अब समझ गई दमयन्ती।

दमयन्ती और सुमित्रा ने अपना सिर हिलाते हुए कहा हां अब समझ गई शान्ता बहिन।

शान्ता—अगर तुम भी चन्दनबाला की तरह अपना आचरण बनाओगी तो सबकी प्यारी बन जाओगी। तुम्हारा भी सब लोग आदर-सन्मान करेंगे।

प्रश्न—१ चन्दनबाला को सब प्यार क्यों करते थे?
२ उसने अपनी माता से क्या पूछा?
३ माता ने क्या कहा?



पाठ २५

बुद्धिमती रोहिणी

सेठ धन्नाजी के चार पुत्र थे। धनपाल, धनदेव धनगोप और धनरक्षित। चारों भाइयों में बड़ा प्रेम था

ेठजी ने चारों के विवाह कर दिये थे। अपनी पुत्र वधुओं से भी सेठजी को सन्तोष था, लेकिन गृहरचा का भार किस वधू को सौंपा जाय, यह चिन्ता सेठजी को सताने लगी। सेठजी विचारवान थे। उन्होंने अपनी पुत्रवधुओं की जाँच करने के लिये एक तरकीब सोची। समय देखकर एकदिन सेठजी ने अपने कुटुम्ब के सब लोगों को बुलाया। सब के सामने अपनी पुत्रवधुओं को पाच २ शाल के दाने देते हुए कहा लो, इन दानों को अपने पास सम्हालकर रखना, और जब कभी मैं मागूँ, वापिस दे देना।

बड़ी पुत्रवधू ने विचारा, सेठजी बूढ़े हो गये हैं। इसलिये उनकी बुद्धि सठिया गई है। ये कोई सोने की मोहरें थोड़े ही हैं, जो सम्हाल कर रखूँ। घर में इतने शाल पड़े हैं, जब मागेंगे तब उनमें से निकालकर दे दूँगी। ऐसा सोच कर उसने वे दाने बाहिर फेंक दिये। दूसरी वधू श्वसुर का प्रसाद समझकर उनको खा गई। तीसरी ने उन्हें एक सोने की डिब्बी में बन्द कर रख दिये लेकिन सबसे छोटी पुत्रवधू ने वे दाने अपने पीहर भिजवा दिये, और साथ में यह कहला भेजा कि इनको एक खेत में बो दिया जाय।

छोटी पुत्रवधू के पाच दानों से पहिले साल एक तोला शाल पैदा हुआ। दूसरे साल सौ तोला यानी सवा सेर। तीसरे साल १२५ सेर। चौथे साल १२५०० सेर और

पाचवे साल १२५०००० सेर धान अर्थात् इक्तीस हजार दो सौ पचास मन शाल पैदा हुआ।

पाच वर्ष गुजर जाने के बाद सेठजी ने अपने कुटुम्ब के सब लोगों को इकट्ठा किया और अपनी पुत्रवधुओं से दिये हुए शाल मगाये। बड़ी पुत्रवधू ने जब अपनी बात कही तो सेठजी उससे बहुत नाराज हुए। उन्होंने उसे घर की सफाई करना, बरतन घिसना और झूठा फेंकना आदि काम सौंपा। उन दानों को फेंक देने से उसका नाम 'उज्झिया रखा गया।

दूसरी वधू प्रमाद समझकर खा गई थी। इसलिये उसका नाम 'भोगवती' रखा और उसे रसोई बनाने का काम सौंपा। तीसरी पुत्रवधू ने उन दानों को बड़ी हिफाजत से डिब्बी में बन्द कर रखा था, इसलिये उसका नाम रक्षिता रखा। उसे खजाने की रक्षा का काम सौंपा। अब सबसे छोटी पुत्रवधू की बारी थी। सेठजी ने अपनी छोटी पुत्रवधू से कहा—लाओ तुम्हारे दाने कहा हैं। उसने उत्तर दिया—श्रीमान्जी, आपके पाच दानें तो अब इतने हो गये हैं कि मैं उन्हें उठाकर नहीं ला सकती। उन्हें लाने के लिये तो मेरे पीहर बैल गाडिया भेजनी होंगी

सेठजी ने उसके घर गाडिया भेजी। बैल गाड़िया धान से खचाखच भरी हुई आई। जिन्हें देखकर सेठजी के

का ठिकाना न रहा। वे अपनी छोटी पुत्रवधू की बुद्धिमानी से बहुत खुश हुए। उन्होंने उसका नाम रोहिणी रखा, और घर के कारोबार का सारा भार उसको सौंप दिया।

प्यारी बहिनों! अगर तुम भी अपने सब काम बुद्धिमती रोहिणी की तरह करोगी तो आगे जाकर तुम भी अपने माता पिता और सास सुसर को खुश रख सकोगी।

प्रश्न—१ रोहिणी ने क्या बुद्धिमानी की?
२ सेठजी ने बधुओं की कैसे जाँच की?
३ उज्झिता ने क्या सोचा?
४ रोहिणी के पाच शाल कितने हो गये?



—≫ अपना गीत ≪—

आओ मिलकर गावें गीत ।
जैनधर्म की प्यारी रीत ।
सदा सत्य कहना बहिनों ।
हिलमिल कर रहना बहिनों ।
वैर विरोध मिटाकर तुम ।
जग में नाम कमाना तुम ।
हो जावेगी जग में जीत ।
जैनधर्म की प्यारी रीत ।
भूले भटके दीन अनाथ ।
जो आवे उनका दो साथ ।
सदा रहे ईश्वर का ध्यान ।
दिल से गाओ मंगल गान ।
यही आज का अपना गीत ।
जैनधर्म की प्यारी रीत ।

—रत्नेश

प्रश्न—१ अपना गीत सुनाओ ।